RAJYA SABHA

Friday, the 11th August, 2006/20 Sravana, 1928 (Saka)

The House met at eleven of the clock, MR CHAIRMAN *in the Chair.*

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Survival of khadi products

*261. DR. K. MALAISAMY: Will the Minister of AGRO AND RURAL INDUSTRIES be pleased to state:

(a) the major threats for khadi products and the measures undertaken to protect those products from such threats;

(b) whether khadi industry would survive and succeed in the absence of concessions and assistance under rebate and subsidy schemes; and

(c) what are the measures and means to prevent spurious products being produced and sold in the name of khadi?

THE MINISTER OF AGRO AND RURAL INDUSTRIES (SHRI MAHAVIR PRASAD): (a) to (c) A statement is placed on the Table of the Sabha.

Statement

(a) and (b) Competition from the organised textiles sector is a major challenge for khadi products. Paucity of working capital, inconsistent quality of products, marketing constraints and technological obsolescence of production equipment are some of the other challenges before the khadi institutions.

To help the khadi institutions meet these challenges, the Government, through Khadi and Village Industries Commission (KVIC), has been implementing the following schemes:

(i) Interest Subsidy Eligibility Certificate (ISEC) scheme for making available working capital to the khadi institutions from banks at the concessional rate of interest of 4 per cent per annum.

(ii) Rebate scheme for providing rebate on sales of khadi.

(iii) Product Development, Design Intervention and Packaging (PRODIP) scheme to help improve design and packaging.

(iv) Rural Industries Service Centre (RISC) scheme for assistance in setting up common facility centres (CFC) to provide infrastructural facility and services in manufacturing, testing/ quality control, maintenance, etc.

(v) Ensuring availability of quality raw material for khadi production through the Central Sliver Plants of KVIC.

(vi) Tie-up with Textiles Committee to make use of the Committee's facilities for testing quality of khadi products.

(vii) Assistance to khadi institutions to participate in exhibitions at national, sub-national levels, etc., to help the marketing of khadi products.

In addition, the Government has recently approved the "Scheme of Fund for Regeneration of Traditional Industries" (SFURTI) for development of 25 khadi clusters over five years beginning 2005-06. The scheme envisages assistance for replacement of charkhas and looms, setting up CFC, product development/quality improvement, improved/new designs and packaging, market promotion, training of khadi artisans, capacity building of khadi institutions etc.

(c) The measures taken by KVIC to check such malpractices include instituting a certification system to ensure the genuineness of Khadi products, sale of khadi products through certified sales outlets, conducting periodical inspections/audits, etc.

DR. K. MALAISAMY: Mr. Chairman, Sir, the entire House is aware that the concept of Khadi was conceived with a laudable purpose and objective to provide employment to the rural people, particularly the non-farm sector, utilising the local talent, utilising the local raw material and to provide employment particularly with a thrust to provide employment to the SC/ST, Backward Classes, other weaker sections and women. With such a laudable purpose it was done. According to me, the maximum, the top priority and importance should be given to this industry. Unfortunately, on ground reality whether it has been done or not is a very big question mark. Sir, coming to my specific supplementary I would say that the Minister has identified, fairly identified the threats,

the various threats, which are there for this industry. But I would like to know whether the list is exhaustive or illustrative. If the Minister is trying to say that the threats are fairly exhaustive, it does not reflect in effect. In other words, the ground reality is different. Sir, I will illustrate. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: There is no need of an illustration...*(Interruptions)*... Let the Minister reply. ...*(Interruptions)*..,

DR. K. MALAISAMY: Sir, as far as he is concerned, he has given the threats and as far as I am concerned, Sir, the official report says that there is...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Dr. Malaisamy, come to your question; otherwise, this one question will take the whole Question Hour. ...*(Interruptions)*...

DR. K. MALAISAMY: I am coming to my first supplementary while my second supplementary will remain. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You complete your first question.

DR. K. MALAISAMY: I will come to my specific question. There is **a** steep decline of the Khadi sector and stagnant sales of Khadi products. This is not my version; this is the official report. But whatever the Minister is going to say, on the ground reality, there is stagnation of sales and steep decline. What I am trying to ask is and I am asking **a** specific question is that under part (c) of the question, he has totally omitted to answer. I mean in the absence of rebate, in the absence of other assistance whether Khadi industry will survive. He has not answered that question at all. ...*(Interruptions)*... I would tike to know whether it will survive or not, I want a specific answer.

श्री महावीर प्रसाद : आदरणीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने कहा हैं कि प्रश्न के "कि" पार्ट का जवाब नहीं दिया गया हैं। श्रीमन्, मैं माननीय सदस्य और सदन को आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि जहां तक वे दबाव की बात करते हैं, मैं इसको दबाव नहीं मानता हूं, खादी जगत में, जो मंशा है माननीय सदस्य महोदय की, रिबेट या सब्सिडी न देने से हमारा खादी उघोग कमजोर हो जाएगा, ऐसी बात नहीं हैं। मैं माननीय सदन को बताना चाहता हूं कि हम खादी को बढ़ाने के लिए बहुत से कार्यक्रम चला रहे हैं और उन कार्यक्रमों के जरिए, अगर आपकी अनुमति हो तो, ऐसे बहुत से कार्यक्रम है, जिनको पढ़ने में समय लगेगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि जो इनकी मंशा हैं कि खादी जगत में यदि सब्सिडी या रियायत नहीं दी

जाएगी तो खादी मर जाएगी या कमजोर हो जाएगी,ऐसी बात नहीं हैं। मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि जैसे 1997-98 में खादी में रोजगार देने के लिए 14.1 लाख नियुक्तियां हुई थी। मैं यह मानने के लिए तैयार हूं कि बीच में आकर वर्ष 2004-05 तक इसमें कमी हुई। वर्ष 2005-06 से इसका प्रतिशत बढ़ता जा रहा हैं और इस वक्त करीब 8.69 लाख नियुक्तियां हुई हैं। मैं कोशिश कर रहा हूं, हमारा मंत्रालय कोशिश कर रहा है कि जो गिरावट आई हैं, उस गिरावट को हम दूर करें। इसलिए श्रीमन् ....(**व्यवधान**)....

श्री सभापति : बोलने दीजिए, बोलने दीजिए।

श्री महावीर प्रसाद : सभापति महोदय, हमने 1956 के एक्ट में अमेंडमेंट किया हैं और उस वक्त मैंने माननीय सदन में बताया था कि हमने इसमें चार व्यक्तियों को विशेषज्ञ के रूप में रखा हैं, जो खादी जगत में दक्षता रखते है। किस प्रकार से हम खादी को प्रचारित करेंगे, खादी को और आगे बढ़ाने के लिए हम तकनीकी आधार पर व्यवस्था करेंगे और जो खादी में गिरावट आई थी, उसकी गिरावट को रोकने के लिए हम पूरा जोर लगाकर काम करेंगे।

श्री सभापति : आप पूरा जोर लगाइये।

DR. K. MALAISAMY: Sir, I have got my own reservations about the Minister's reply. Anyway, the Minister has given a reply. I will be too happy if he is able to survive without subsidy. Mr. Chairman, Sir, I know that you are very anxious that I must go to the second supplementary. Sir, coming to my second supplementary, I would ask whether the Government has made a totality of the survey of the whole country relating to the potentialities, namely, the strength, the weakness, the opportunities, the threats of the whole industry. And whether you have drawn a perspective plan for a particular period. If so, have you got an action plan? If so, have you set a time frame for it?

श्री महावीर प्रसाद : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि हमने पायलट प्रोजेक्ट इस संदर्भ में बनाया हैं और उस पायलट प्रोजेक्ट को हमने चार भागों में बांटा हैं। वह यह देखेगा कि खादी को आगे बढ़ाने के लिए या रिबेट या सबसिडी के न रहते हुए क्या कदम उठाये जायें। हम यह प्रयोग करके देखना चाहते हैं। इसके बारे में एक सक्षम समिति बनाई गई है, उसकी जैसी सूचना आयेगी, उसकी जैसी रिपोर्ट आयेगी, उसके आधार पर हम और आगे कार्यवाहीं करेंगे। मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करता हूं कि इसमें जो गिरावट है, उसको दूर करने के प्रयास करेंगे

श्री सभापति : माननीय सदस्य,मेरे पास 20 क्वेश्चन सप्लीमेंट्री पूछने के लिए आए हैं। मैंने यह तय किया हैं कि जो खादी पहन कर आये हैं, उन्हीं को अलाऊ करूंगा। ...(**व्यवधान**).. जो खादी पहन कर आये हैं, उनको अलाऊ करूंगा। ...(**व्यवधान**)... मैं फर्जी खादी वालों को अलाऊ नहीं करूंगा

श्री उदय प्रताप सिंह : सर, आपने बहुत बड़ा सम्मान दिया हैं, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। सर, मेरा एक सवाल हैं। अब जो जमीनी हकीकत हैं, आदरणीय मंत्री जी हमसे सहमत होंगे कि आर्गनाइज्ड सेक्टर से इतना खतरा खादी को नहीं हैं जितना खतरा हथकरघे से हैं, हैडलुम से हैं और हथकरघे का बना हुआ कपड़ा बाजार में खादी की तुलना में बहुत सस्ता हैं और वह बिल्कुल एक सा लगता हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि हथकरघे से बने हुए कपड़े पर कभी विचार किया है कि वह कपड़ा बिना सबसिडी के इतना सस्ता क्यों हैं और हमारा खादी का इतना महंगा क्यों हैं? आदरणीय महात्मा गांधी जी के अनुसार खादी वस्त्र नहीं, एक विचार था, उसके पीछे एक पूरा दर्शन था, जैसा कि अभी हमारे मित्र ने बताया हैं अब हमको उस पर ज्यादा से ज्यादा सोचना चाहिए। सर, इसमें मुश्किल हैं, मैं आपको बता देता हूं कि हथकरघा दूसरे डिपार्टमेंट में आता हैं। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि दोनों का कोऑर्डिनेशन करके, खादी को बाजार में कुछ सस्ता करने की, जिससे कि वह ज्यादा बिके, ऐसी कोई योजना मंत्री जी की हैं?

श्री महावीर प्रसाद : माननीय सभापति जी, हमारे आदरणीय सदस्य ने पूछा हैं कि वह हथकरघा पावरलूम हैं, यह टैक्सटाइल मंत्रालय के अंतर्गत आता हैं, लेकिन बात सत्य हैं कि हमारी खादी उससे महंगी हैं। इसलिए महंगी हैं कि हमारी खादी का बुनकर देहातों में रहता हैं, जिसमें अधिकतर महिलाएं दलित और कमजोर वर्ग के जुलाहे होते है, जो अपने हाथों से बुनते हैं और वह दूसरा पावरलूम हैं। हमने इसमें वस्त्र मंत्रालय से एक करार किया है कि हम दोनों का समन्वय करके, किस प्रकार से खादी को आगे बढ़ाएं।

श्री मोती लाल वोरा : माननीय सभापति महोदय, देश की आजादी की लडाई में महात्मा गांधी जी ने खादी के महत्व को इस बात से सिद्ध किया था कि विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और खादी अपनाने के लिए घर-घर में चरखा लगाने की एक प्रथा प्रारंभ की थी। मैं माननीय मंत्री जी सें यह जानना चाहता हूं कि उनके मंत्रालय ने, उनके विभाग ने देश में कितने अम्बर चरखे लगाये है माननीय सभापति महोदय अगर चर्ख मे एक गाव मे अगर पच्चीस चरखे दत्नगे है, तो कम से कम पचास रूपए की आमदनी उस परिवार को होती हैं। तो मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हू कि कितने चरखे आपने खादी के उत्पादन के लिए वहां पर रखे हैं, खादी के सूत के उत्पादन के लिए रखे हैं? दूसरी बात, खादी की बिक्री में, खादी जिस प्रकार महंगी होती जा रही हैं, उसे कम करने की दिशा में आपने कहा हैं कि खादी

की बिक्री पर रिबेट प्रदान करने की रिबेट योजना हैं माननीय सभापति जी, रिबेट की योजना तो अनेक वर्षो से चल रही हैं। क्या उस रिबेट को ये बढ़ाने वाले है, ताकि खादी के प्रति लोगों का आकषर्ण बढ़े? साथ ही खादी संस्थाओं को बैंको से चार प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज देने की बात आपने कही हैं। ब्याज चार प्रतिशत पर मिले, लेकिन कितने लोगों को इस दर पर ब्याज मिल पा रहा हैं, इसकी जानकारी जब तक हम नहीं लेंगे, जब तक हम इसकी तह में नहीं जाएंगे, इसको नीचे जाकर नहीं देखेंग, तक तक केवल घोषणा करने से काम नहीं चलेगा। खादी का उत्पादन बढ़ना चाहिए, खादी सस्ती होनी चाहिए और लोगों को गांव-गांव में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं, इसके बारे में मैं माननीय मंत्री महोदय से जानकारी चाहता हूं।

श्री महावीर प्रसाद : माननीय सभापति जी, वोरा जी हमारे बड़े पुराने सहयोगी और गांधीवाद नेता हैं। मैं इस संदर्भ में कहना चाहता हूं कि चार प्रतिशत ब्याज पर इन संस्थाओं को हम बैंको के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराते हैं, इसलिए कि ये संस्थाएं आगे बढ़कर .... जैसे कि यदि पी.एल.आर. बारह प्रतिशत हैं, तो चार प्रतिशत हम संस्थाएं चार प्रतिशत का ही ब्याज देते हैं और आठ प्रतिशत जो शेष बचता हैं, वह के.वी.आई.सी. के माध्यम से सरकार बैंकों को देती हैं। इस प्रकार से इन संस्थाओं को दिए गए, ऋण पर पिछले साल हमने लगभग बाईस करोड़ का सब्सिडी बैंकों को दिया हैं ताकि इसके आधार पर खादी को और आगे मजबूत कर सकें।

श्रीमन् जो दूसरी बात इन्होने कहीं कि " प्रेदीप" हमारा एक कार्यक्रम चल रहा हैं, "प्रेदीप" के आधार पर हम गुणवत्ता एवं पसंद लायक खादी बना रहे हैं। ऐसी खादी हम उपयोग में लाने जा रहे हैं, जिसकी वजह से हमारे सभी लोग जो बाजार में जाते हैं, वे पसंद की खादी ले सकें। इसके लिए मैंने एक मैम्बर बनाया हैं, जो केवल मैंनेजमेंट के विषय में सुधार करने के लिए और खादी मे किस प्रकार से हम दक्षता प्राप्त करें, यह देखेगा। यह बात माननीय सदस्य ने बिल्कुल सत्य कहीं हैं कि अम्बर चरखा जो हैं,गांवो में किसानों के पास विशेषकर महिलाओं के लिए अम्बर चरखे का प्रयोग होता हैं। श्रीमन मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि हम प्रयत्न कर रहे हैं, जो नया विधेयक अभी माननीय सदन ने पास किया हैं, उसके आधार पर खादी जगत में हम और प्रगति के लिए काम करने जा रहे हैं।

प्रों. राम देव भंडारी : माननीय सभापति जी, मैं बिहार के मधुबनी जिले से आता हूं। बिहार की मधुबनी पेटिंग्स और खादी की बहुत प्रसिद्वि रही हैं। पहले मधुबनी के धर-घर मे तकली और चरखे चलते थे। इनसे बूढी और विधवा औरतों का गुजारा चलता था। परिवार की अन्य महिलाओं को यदि समय मिलता, तो वे भी तकली और चरखे से सूत कातती थी। इस प्रकार इनसे आंशिक आमदनी होती थी। महोदय, अब वहां पर यह सब कुछ बंद हो गया हैं। मैं माननीय मंत्री महोदय से यह आग्रह करना चाहता हूं कि जो व्यवस्था गांवो में रोजगार देती हैं,

काम देती हैं, उस व्यवस्था को गांव में पुनः लागू करें। महोदय, खादी तो हमारी राष्ट्रीय भावना से जुड़ी हुई हैं । हमें खादी पहनने से राष्ट्रीय सम्मान और गौरव का अनुभव होता हैं। इसलिए खादी को पुनः गांवो में ले जाएं। जिस प्रकार खादी आज गांवो से दूर होती जा रही हैं, इसको नजदीक लाएं, मैं मंत्री महोदय से यही अनुरोध करना चाहता हूं।

श्री महावीर प्रसाद : माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भंडारी जी से यह कहना चाहता हूं कि ये खादी पहने हुए है और मधुबनी में खादी को बढ़ावा देने के लिए जो बात इन्होने बताई हैं, मैंने इस बारे में जानकारी प्राप्त की हैं। मधुबनी में खादी का काम बहुत होता हैं। हमारी तथा हमारी सरकार की यह मंशा हैं और हम जो नया विधेयक लाए हैं, वह भी इसी भावना को सामने रखकर लाए हैं जो खादी दूर होती जा रही थी, उसको पुनः स्थापित करने के लिए, हमारा यह विचार हैं आगे जब भी मैं आपके सामने आऊंगा तो खादी को एक नए रूप में आपके सामने लेकर आऊंगा।

श्री सभापति : यदि अन्य कोई माननीय सदस्य खादी पहने हुए हों तो वे क्वेश्चन कर सकते हैं। ...(**व्यवधान**)... केवल खादी ...(**व्यवधान**)... यह खादी नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)...

SHRI N. JOTHI: Sir, in Tamil Nadu, we are for hand looms.

श्री उपसभापति :केवल खादी वाले। ...(**व्यवधान**)... ठीक हैं, ठीक हैं। श्री अनवर अली। ....(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : सर, आज मुझसे चूक हो गई मैं खादी पहनकर नहीं आया। ....(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : केवल खादी पहना हुआ ही। ...(**व्यवधान**)...

श्री नंदी येल्लैया : नहीं. मै फुल खादी नहीं पहने हुए हूं। ...(व्यवधान)... इसीलिए बोल रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : सर, ये तो कॉटन में हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री नंदी येल्लैया : कॉटन वालों को एलाऊ मत करो और सफारी वालों को भी एलाऊ मत करो।

श्री अनवर अली : महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूं कि खादी को केन्द्र सरकार ने और सरकारों ने संरक्षित किया हुआ हैं। हम जानना चाहते है कि क्या केन्द्र सरकार अपने मुख्तलिफ विभागों के लिए रेल में या जेल में या सरकारी कार्यालय में पर्दा या हॉस्पिटल में वर्दी के लिए,कहां-कहां पर खादी के कपड़ो की खरीद

करती हैं? आपने जो उत्तर दिया है, यह सदन को बिल्कुल गुमराह करने वाला है। इसमें एक पैसे की भी सच्चाई नहीं है। आप खादी को मार रहे हैं,बुनकर मर रहे है। वे खुदखुशी कर रहे हैं। बुनकर भी किसानों की तरह से खुदखुशी कर रहे हैं। महाराष्ट्र में खुदकुशी कर रहे हैं,आन्ध्र प्रदेश में कर रहे हैं और उत्तर प्रदेश में भी कर रहे हैं। आपको यह सब दिखाई नहीं पड़ रहा हैं। आप यहां बिल्कुल गलत बात बोल रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... इसीलिए आप खरीद कीजिए। आप ऐसे स्थानो पर जाइए। ....(**व्यवधान**)... आप खरीद करते हैं या नहीं। ...(**व्यवधान**)... मजदूर बुनकर मर रहे हैं और किस विभाग मे ये खरीद करते है। ....(**व्यवधान**).. किस विभाग के लिए आप खरीद करते हैं?

श्री सभापति : आपका क्वेश्चन हो गया? ...(**व्यवधान**)... प्लीज टेक योर सीट्स। ...(**व्यवधान**)... खादी पहने हुए आदमी को इतना गुस्सा नहीं आता है।

श्री राजनीति प्रसाद : सभापति जी, 40 वर्षो से लगातार हम लोग खादी ही पहनते हैं और खादी पहनने के पीछे कोई दूसरी भावना नहीं हैं। खादी पहनने के पीछे यही भावना हैं कि यह हमारे शरीर को भी अच्छा लगता हैं और एक भावना हैं, उसको भी अच्छा लगता हैं। सभापति जी, मैं यह जानना चाहता हूं कि बाजार में आमतौर पर जो खादी बिकती हैं और जो स्टोर में, खादी भंडार में बिकती हैं, अगर दोनों को मिला दिया जाए, तो दोनों में कोई फर्क नहीं होता हैं। लेकिन फिर भी हम लोग बड़ी दुकान में जाते हैं, खादी भंडार में जाते हैं आपके सेंट्रल खादी भंडार, पटना मे भी जाते हैं, रीगल में भी खादी भंडार हैं, वहां भी जाते हैं, लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि दोनों में कोई औसतन फर्क होना चाहिए, ताकि यह समझ में आए कि यह खादी सही हैं और यह खादी गलत हैं। माननीय मंत्री जी से मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आप ऐसी कोई व्यवस्था करेंगे,िजससे यह लगे कियह आम खादी हैं और यह प्योर खादी हैं, क्योंकि अगर यह नहीं होगा,तो हमारे जैसे लोग ठगे जाएंगे और फिर साधारण खादी पहनेंगे?

श्री महावीर प्रसाद : माननीय सभापति जी, माननीय सदस्य ने यह पूछा कि रीगल या पटना में दो प्रकार की खादी हैं। श्रीमन्, यदि आप मूल प्रश्न को देंखे,तो उस मूल प्रश्न में यह पूछा गया कि इस प्रकार की नकली खादी को रोकने के लिए आप क्या व्यवस्था कर रहे हैं? श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहूंगा कि हमारे यहां के.वी.आई.सी. से मान्यता प्राप्त 1236 संस्थाएं हैं,िजनमें खादी का काम होता हैं। कनि संस्थाओं में खादी सही हैं, इसकी जाचं करने के लिए उसकी एक लेखा परीक्षा होती हैं कि किस संस्था में खराब खादी का उत्पादन हो रहा हैं। इसलिए हमने करीब 1160 संस्थाओं की लेखा परीक्षा करवायी हैं, जिनमें से 953 संस्थाओं को show-caus-notice- दिया गया हैं कि आप कारण बताइए कि किस प्रकार की खादी प्रयोग कर रहे हैं? इसके बाद 5 संस्थाओं का निलम्बित किया गया हैं। इनमें 97 संस्थाएं ऐसी हैं, जो नकली खादी का प्रयोग करती हें, यह खादी सर्टिफिकेट के अन्य शर्तो को पूरा नहीं करते हैं

उनका जो आकलन मिला हैं, उस आधार पर उनको बर्खास्त कर दिया गया हैं, उनका प्रमाण पत्र निरस्त कर दिया गया हैं. इसलिए हम कोशिश कर रहे हैं कि नकली खादी न बिके। इसके अलावा मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगा कि हमारे खादी ब्रांड, जैसे देशी हाट, सर्वोदय, आदि को बताया गया हैं कि खादी खरीदने वाला उस ब्रांड के आधार पर खादी खरीदेगा, नकल खादी नहीं बिकेगी। इसलिए मैं प्रयत्न कर रहा हूं कि खादी पहनने वाले नकली खादी का प्रयोग न करें।

श्री सभापति : देखिए,अब आज जो यह बोल रहे हैं ...(**व्यवधान**)... एक मिनट, एक मिनट। माननीय मंत्री महोदय, आज जो ये सब बोल रहे हैं, आप उन सबके कपड़े देखना कि उनके कपडे खादी के हैं या फर्जी खादी के हैं।

श्री रवि शंकर प्रसाद : आदरणीय सभापति जी, अभी बार-बार यह बात कहीं गई कि खादी इस देश की सस्कृति का प्रतीक हैं। लेकिन समय के अनुसार इसकी गुणवत्ता, इसके प्रबन्धन, इसके वितरण, इन सबों के बारे में नई सोच पैदा करने की आवश्यकता हैं। माननीय मंत्री जी, आपको यह ज्ञात होगा कि आज पूरे देश में कॉटन कपड़ों की मांग बढ़ी हैं, जिनमें लिनेन, हैडूलम और बाकी अन्य हैं, उसके लिए एक बहुत बड़ा मार्केट है। खादी के लिए भी एक बहुत बड़ा मार्केट हैं। मेरा आपसे एक विनम्र सवाल यह हैं कि नए प्रबन्धन, नए वितरण और नई गुणवत्ता, प्रतिस्पर्द्धा के अनुरूप खादी के लिए आपकी चिंता क्या हैं? आपने कानून पास किया, यह उत्तर बहुत सुन लिया, आप कृपया इसे छोड़ कर बताइए कि आपने क्या-क्या कार्रवाई की हैं?

श्री महावीर प्रसाद : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से रवि शंकर बाबू को बताना चाहता हूं कि हम जो विधेयक पास करते हैं--- आपने पास किया होगा, तो किया होगा—लेकिन हमारी सस्कृति यह हैं कि हम जो विधेयक पास करते हैं, जो कानून बनाते हैं, उस पर विश्वास करके बनाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : महोदय, मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया। ...(**व्यवधान**)...

SHRI MAHAVIR PRASAD: Sir, I am not yielding ...*(Interruptions)*... I am not yielding ...*(Interruptions)*...

श्री रवि शंकर प्रसाद : एक्ट लागू करना अच्छी बात हैं, मगर सवाल का जवाब तो दीजिए।

श्री महावीर प्रसाद : महोदय, आदरणीय रवि शंकर जी ने एक्ट को पढ़ा नहीं हैं। उसी को नया रूप देने के लिए हम ने जो 4 विशिष्ट मेंबर रखे हैं। उन में एक साइंस एंड टैक्नॉलिजी का जानकार होगा, एक रूरल डवलपमेंट का जानकार होगा, एक ट्रेनिंग का स्पेशालिस्ट रखा गया हैं

और एक मार्केटिंग डिर्पामेंट का जानकर रखा गया हैं। इस प्रकार से हम लोगों के लिए पसंद की खादी की व्यवस्था कर रहे हैं।...(व्यवधान)...

श्री नंदी येल्लैया : माननीय सभापति महोदय, अभी हमारे मंत्री महोदय ने खादी उघोग में आई गिरावट को रोकने व खादी को आगे बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव दिए। महोदय, हमारे देश के अंदर आजकल बड़े-बड़े नेता सफारी पहनने के बहुत आदी हो गए हैं। ...(व्यवधान)... महोदय, गांधी जी का सपना था कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार बढ़ाने में खादी का विकास हो। महोदय, मैं एक दफा सफारी में एम.पी. की हैसियत से एक बड़े फंक्शन में गया, लेकिन वहां मेरे को हटा दिया गया। मुझे सफारी पहनने की सजा हुई। मैं कहना चाहता हूं कि खादी का बहुत importance हैं, उस में सुंदरता हैं, वह बहुत dignified हैं जिसे पहनकर हम बड़े नेता के रूप में जाकर बैठ सकते है। मै मंत्री महोदयस को बताना चाहूंगा कि हम देखते हैं कि कई खादी भंडारों में खादी का सामान नहीं रहता हैं। वहां जो आदमी बैठे हैं, वे खादी सामान को दिखाते भी नहीं हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि आप खादी को ज्यादा रिबेट दीजिए और उस को ज्यादा मॉडर्नाइज कीजिए। महोदय, आज बहुत से लोग टैरीकॉट के आदी हो गए हैं, अगर उसे बंद करना हैं तो खादी को मॉडर्नाइज कीजिए और उस पर डिस्कांउट दीजिए।

श्री महावीर प्रसाद : माननीय सभापति महोदय, हमारे आंध्र प्रदेश के माननीय सदस्य एक फंक्शन में सफारी सूट में गए, तो उन को निकाल दिया गया। मैं उन्हे विश्वास दिलाना चाहता हूं और यहां जो सहयोगी माननीय मंत्री हमारे साथ बैठे हैं और माननीय सदस्य बैठे हैं, उन से मैं हाथ जोड़कर आग्रह करूंगा कि वे खादी के विचार को अपनाएं और खादी को आगे बढ़ाएं। यही मेरा सुझाव हैं।

Medicine prices in tax holiday States

*262. SHRI PRASANTA CHATTERJEE: Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to refer to answer to Unstarred Question 3682 given in the Rajya Sabha on the 19th May, 2006 and state:

(b) whether it is a fact that manufacturing companies are free to fix the MRP of drugs manufactured in tax-exempt States;

(b) whether it is also a fact that companies are supplying drugs manufactured in tax-exempt States to gain higher margins of profit; and